अमल—(१) राजा समुद्रविजय का मन्त्री। हपु० ५०.४९

(२) शोभपुर नगर का राजा। अन्त में यह पुत्र को राज्य सौंपकर आठ गाँवों का प्रमाण करके श्रावक हो गया तथा मरकर स्वर्ग में देव हुआ। पपु० ८०.१८९-१९५

(३) लंका का एक देश। पपु० ६.६६-६८

(४) सौधर्मेन्द्र द्वारा स्तुत वृषभदेव का एक नाम। मपु० २५.११२

अमलकण्ठ—एक नगर कनकरथ (हेमरथ) यहाँ का राजा था। वह हस्तिनापुर के राजा मधु की सेवा के लिए उसके पास गया था। मपु० ७२.४०-४१

अमात्य—राजा का मन्त्री स्तर का एक अधिकारी मपु० ५.७

अमित—(१) सिंहरथ विद्याधर का विमान। मपु० ६३.२४१-२४२

(२) सौधर्मेन्द्र द्वारा स्तुत वृषभदेव का एक नाम। मपु० २५.१६९

अमितगति—(१) राजा वसुदेव और उसकी रानी गन्धर्वसेना का पुत्र, वायुवेग का अनुज तथा महेन्द्रगिरि का अग्रज। हपु० ४८.५५

(२) अरिंजय के साथी एक चारणमुनि। पापु० ४.२०५

(३) भवनवासी देवों का पन्द्रहवाँ इन्द्र। वीवच० १४.५४-५८

(४) मति, श्रुत और अवधि इन तीन ज्ञानों के धारक एक मुनि। गर्भिणी अंजना को उसका पूर्वभव आदि इन्हीं ने बताया था। ये आकाशगामी थे। पपु० १७.१३९-१४०

(५) विजयार्ध पर्वत की दक्षिण श्रेणी के शिव मन्दिर नगर के राजा महेन्द्रविक्रम का पुत्र। इस विद्याधर के धूमसिंह और गौरमुण्ड नाम के दो विद्याधर मित्र थे। हिरण्यरोम तापस की पुत्री सुकुमारिका से इसने विवाह किया था। हपु० २१.२२-२८ इसकी विजयसेना और मनोरमा नाम की दो स्त्रियाँ और थीं। विजयसेना की पुत्री सिंहसेना तथा मनोरमा के पुत्र सिंहयश और वराहग्रीव थे। बड़े पुत्र को राज्य देकर और छोटे पुत्र को युवराज बनाकर यह अपने पिता मुनि महेन्द्रविक्रम के पास दीक्षित हो गया। हपु० २१. ११८-१२२

अमितगुण—चारण ऋद्धिधारी मुनि अजितंजय मुनि के साथी। मपु० ७४.१७३, वीवच० ४. ६-७ दे० अजितंजय

अमितज्योति—सौधर्मेन्द्र द्वारा स्तुत वृषभदेव का एक नाम। मपु० २५.२०५

अमिततेज—(१) राजा अर्ककीर्ति और उसकी रानी ज्योतिर्माला का पुत्र, सुतारा का भाई। त्रिपृष्ठ नारायण की पुत्री ज्योतिःप्रभा ने इसे तथा इसकी बहिन सुतारा ने त्रिपृष्ठ के पुत्र श्री विजय को स्वयंवर में वरण किया था। पिता के दीक्षित होने पर इसने राज्य प्राप्त किया, फिर अपने बड़े पुत्र सहस्ररश्मि के साथ हीमन्त पर्वत पर संजयंत मुनि के पादमूल में विद्याच्छेदन करने में समर्थ महाज्वाला आदि विद्याएँ सिद्ध कीं। रथनूपुर नगर से आकर अशनिघोष को पराजित किया और अपनी बहिन सुतारा को छुड़ाया। पापु० ४.८५-९५, १७४-१९१ यह पिता के समान प्रजा-पालक था और इस लोक और परलोक के हित कार्यों में उद्यत रहता था। प्रज्ञप्ति आदि अनेक विद्याएँ इसे सिद्ध थीं। दोनों श्रेणियों के विद्याधर राजाओं का यह स्वामी था। दमवर मुनि को आहार देकर इसने पंचाश्चर्य प्राप्त किये थे। मुनि विपुलमति और विमलगति से अपनी आयु मास मात्र की अवशिष्ट जानकर इसने अपने पुत्र अर्ककेतु को राज्य दे दिया, आष्टाह्निक पूजा की और प्रायोपगमन में उद्यत हुआ तथा देह त्याग कर तेरहवें स्वर्ग के नन्द्यावर्त नाम के विमान में रविचूल नाम का देव हुआ। यहाँ से च्युत होकर वत्सकावती देश की प्रभावती नगरी में स्तिमितसागर और उनकी रानी वसुन्धरा का अपराजित नाम का पुत्र हुआ। मपु० ६२. १५१, ४११, पापु० ४.२२८-२४८

(२) विजयार्ध पर्वत की उत्तरश्रेणी में स्थित गगनवल्लभ नगर के राजा गगनचन्द्र और उसकी रानी गगनसुन्दरी का छोटा पुत्र। अमितवेग, अपरनाम अमितमति, इसका भाई था। मपु० ७०.३८-४१, हपु० ३४.३४-३५

(३) वज्रजंघ की अनुजा अनुन्धरी का पति, चक्रवर्ती वज्रदन्त का पुत्र और नारायण त्रिपृष्ठ का जामाता। यह पिता के साथ यशोधर योगीन्द्र के शिष्य गुणधर से दीक्षित हो गया था। मपु० ८.३३-३४, ७९, ८५, ६२.१६२

(४) विजयार्ध पर्वत की दक्षिणश्रेणी के विद्युत्कान्त नगर के स्वामी प्रभंजन विद्याधर और उसकी रानी अंजना देवी का पुत्र यह अखण्ड पराक्रमी, विजयार्ध के शिखर पर दायाँ पैर रखकर बायें पैर से सूर्य-विमान का स्पर्श करने में समर्थ, शरीर को सूक्ष्म रूप देने में चतुर होने से विद्याधरों द्वारा अणुमान् नाम से अभिहित और सुग्रीव का प्राणप्रिय मित्र था। राम नामाङ्कित मुद्रिका लेकर यह सीता को खोजने लंका गया था। राम ने इसे अपना सेनापति बनाया था। मपु० ६८.२७५-४७२, ७१४-७२० दे० अणुमान्

अमितप्रभ—(१) राजा वसुदेव और उसकी रानी बालचन्द्रा का छोटा पुत्र, वज्रदंष्ट्र का अनुज। हपु० ४८.६५

(२) एक मुनि। ये पुण्डरीकिणी नगरी में आये थे। वहाँ मणिकुण्डल विद्याधर को इन्होंने सनातन धर्म का स्वरूप बताया था। मपु० ६२.३६२-३६३

अमितप्रभा—यह मथुरा के राजा रत्नवीर्य की दूसरी रानी थी। मन्दर इसका पुत्र था। महापुराण में इसका नाम अनन्तवीर्य और इसकी रानी का नाम अमितवती बताया गया है। मपु० ५९.३०२-३०३, हपु० २७.१३५-१३६

अमितमति—(१) गुणवती की दीक्षागुरु आर्यिका। मपु० ४६.४५-४७

(२) अमिततेज का भाई। मपु० ७०.३९-४१ दे० अमिततेज

(३) पद्मिनीखेट नगर निवासी सागरसेन की पत्नी, धनमित्र, और नन्दिषेण की जननी। मपु० ६३.२६३

अमितवती—मथुरा नगरी के राजा अनन्तवीर्य की दूसरी रानी, राजकुमार मन्दर की जननी। मपु० ५९.३०२-३०३

अमितवाहन—(१) भवनवासी देवों का इन्द्र। वीवच० १४.५४-५८

(२) इस नाम के एक मुनि। अलका के राजा विद्युद्दंष्ट्र के पुत्र सिंहरथ ने इनकी वन्दना की थी। पापु० ५.६६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अमितविक्रम—पुष्करार्ध संबंधी पूर्वार्ध भरतक्षेत्र के नन्दनपुर नगर का राजा। इसकी रानी आनन्दमति थी। इन दोनों की धनश्री और अनन्तश्री नाम की दो पुत्रियाँ थीं। मपु० ६३.१२-१३

अमितवेग—(१) अमिततेज का बड़ा भाई। हपु० ३४.३५-३५ दे० अमिततेज

(२) विजयार्ध के स्थालक नगर का राजा, मणिमति का पिता। विद्या-साधना में रत मणिमति को देखकर एक समय रावण इस पर आसक्त हो गया था। मणिमति को अपने अधीन करने के लिए रावण ने उसकी विद्या छीन ली थी। बारह वर्ष से साधना में रत इस कन्या ने विद्या की सिद्धि में विघ्न होता देखकर निदान किया था कि वह इसी की पुत्री होकर इसके वध का कारण बने। निदान वश आयु के अन्त में मरकर वह मन्दोदरी के गर्भ से उत्पन्न हुई जिसे सीता नाम से सम्बोधित किया गया। मपु० ६८.१३-२७

अमितशासन—सौधर्मेन्द्र द्वारा स्तुत वृषभदेव का एक नाम। मपु० २५.१६९

अमितसागर—एक मुनि। इन्होंने विदेह क्षेत्र के अशोकपुर नगर निवासी आनन्द वैश्य के घर आनन्दयशा से आहार प्राप्त किया था। इन्हें आहार देने से आनन्दयशा को पंचाश्चर्य प्राप्त हुए थे। मपु० ७१.४३२-४३४

अमितसार—समवसरणभूमि के तीसरे कोट के पश्चिम द्वार के आठ नामों में दूसरा नाम। हपु० ५७.५६, ५९

अमितसेन—पुन्नाटगण के अग्रणी एक मुनि। ये षट्खण्डागम के ज्ञाता और कर्म-प्रकृति श्रुत के धारक थे। जयसेन इनके गुरु थे। ये प्रसिद्ध वैयाकरण और सिद्धान्त के मर्मज्ञ विद्वान् थे। इनकी आयु सौ वर्ष से अधिक थी। ये शास्त्रदानी थे। कीर्तिषेण मुनि इनके अग्रज थे। हपु० ६६.२९-३३

अमितसेना—एक गणिनी। इसने पुष्करवरद्वीप में स्थित वीतशोक नगर के राजा चक्रध्वज की रानी कनकमालिका और उसकी दोनों पुत्रियों कनकलता और पद्मलता को उपदेश दिया था जिसके प्रभाव से वे तीनों मरकर प्रथम स्वर्ग में देव हुई थीं। मपु० ६२.३६४-३६७

अमिताङ्क—राजपुर नगर का राजा, सुधर्ममित्र का शिष्य, ग्यारहवें चक्रवर्ती जयसेन के पूर्वभव का जीव। पपु० २०.१८८-१८९

अमूढ़दृष्टि—सम्यग्दर्शन के आठ अंगों में एक अंग—तत्त्व के समान प्रतिभासित मिथ्यानय के मार्गों में "यह ठीक है" इस प्रकार का मोह न होना। इसका धारक तीनों प्रकार की मूढ़ताओं का त्यागी होता है। मपु० ६३.३१७, वीवच० ६.६६

अमूर्त—सौधर्मेन्द्र द्वारा वृषभदेव का एक नाम। मपु० २५.१८७

अमूर्तात्मा—सौधर्मेन्द्र द्वारा स्तुत वृषभदेव का एक नाम। मपु० २५.१२८

अमृत—(१) शरीर का पोषक दिव्यपान। मपु० २.१२

(२) आदित्यवंशी नृप अतिबल का पुत्र। सुभद्र इसका पुत्र था। शरीर से निःस्पृह होकर यह निर्ग्रन्थ हो गया था। पपु० ५.४-१०

(३) सौधर्मेन्द्र द्वारा स्तुत वृषभदेव का एक नाम। मपु० २५.१२७

अमृतगर्भ—रुचिकर, स्वादिष्ट और सुगन्धित किन्तु गरिष्ठ मोदक। मपु० ३७.१८८

अमृतदीधिति—चम्पापुर नगर का राजा। हपु० १५.४८-५३

अमृतधार—विजयार्ध पर्वत की दक्षिणश्रेणी के पचास नगरों में सैंतालीसवां नगर। हपु० २२.१००

अमृतपानक—भरत का प्रिय रासायनिक पेय पदार्थ। मपु० ३७.१८९

अमृतपुर—विजयार्ध पर्वत की दक्षिणश्रेणी का एक नगर-विद्याधरों की निवासभूमि। यहाँ का राजा रावण का सहायक था। पपु० ५५.८४-८८

अमृतप्रभ—अन्धकवृष्णि का पौत्र तथा अभिचन्द्र का पुत्र। यह चन्द्र, शशांक, चन्द्राभ, शशी और सोम का अनुज था। हपु० ४८.५२

अमृतप्रभावा—दर्भस्थल के राजा सुकोशल की रानी, अपराजिता की जननी। पपु० २२.१७१-१७२

अमृतबल—सूर्यवंश में उत्पन्न अतिबल का पुत्र। हपु० १३.८, १२

अमृतमेघ—उत्सर्पिणी काल के अतिदुःषमा काल में निरन्तर सात दिन तक अमृत की वर्षा करनेवाले मेघ। मपु० ७६.४५४-४५७

अमृतरसायन—(१) सुराष्ट्र देश में गिरिनगर के राजा चित्ररथ का एक रसोइया। इसकी मांस पकाने की चतुराई से प्रसन्न होकर राजा ने इसे बारह गाँव दिये थे, किन्तु राजा चित्ररथ के दीक्षित होते ही राजा के पुत्र मेघरथ ने इसके पास एक ही गाँव रहने दिया था, शेष उससे छीन लिये थे। राजा के दीक्षित होने तथा अपने ग्राम छीने जाने में सुधर्म नामक मुनि को कारण समझकर यह मुनि वेष से द्वेष करने लगा था। द्वेष वश इसने मुनि को आहार में कड़वी तूमड़ी दी थी। कड़वा फल खाने से मुनि का गिरनार पर्वत पर समाधिपूर्वक मरण हुआ। मुनि मरकर अहमिन्द्र हुए और यह मरकर तीसरे नरक में उत्पन्न हुआ। मपु० ७१.२६५-२७७

(२) सुभौम चक्रवर्ती का रसोइया। अविवेक पूर्वक सुभौम द्वारा दण्डित किये जाने से मरते समय इसने सुभौम को मारने का निदान किया था। मरकर यह विभंगावधिज्ञानधारी ज्योतिष देव हुआ तथा पूर्व वैर वश सुभौम को अपनी ओर आकृष्ट करके छलपूर्वक समुद्र के बीच ले गया। वहाँ इसने उसे मार डाला। मपु० ६५.१५२-१६८

अमृतवती—(१) विजयार्ध पर्वत की दक्षिणश्रेणी का देश। मेघकूट इसी देश का एक नगर था। कालसंवर यहाँ का राजा था। मपु० ७२.५४

(२) पृथिवीनगर के राजा पृथु की रानी, कनकमाला की जननी। पपु० १०१.५-८

अमृतवेग—राक्षसवंशी, सुव्यक्त का पुत्र। यह अपने पुत्र भानुमति को पिता से प्राप्त राज्य सौंपकर दीक्षित हो गया था। पपु० ५.३९३-४००

अमृतसागर—श्रुतकेवली तथा अनेक ऋद्धियों के धारक सागरदत्त के संयमदाता मुनि। मपु० ७६.१३४, १४७-१४८

अमृतस्राविणी—एक ऋद्धि। इससे भोजन में मिला विष भी अमृतरूप हो जाता है। मपु० २.७२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org